

69
Iyauhsa

2017 I

सा ज्ञात्रा धनं ॥ नदिके या नद वद ऊ ॥ म
म नंद म न कु म ला ऊ नंद म ल नु न स
यु य स्थिति ॥ ॥ दि न वि न य द्वि दी ॥
दि न सः यु मिय या न व सी ॥ व त्रा स र्था द या ॥
य ह सा म शा नि ल स न द गु ना ग शा य वेश

ग न द व ता ॥ नि ल स त्र यि ग ल म्मा गा म
न कं य न म्मा स का म क रू त्रा ग म्म ल त्रा
ग ह द य म्म ल स्या वा न क रू च ल व वा ग्व
उ ता उ स्या क रू न त्रा ग म्मा त्र व रू त्रा ग
वी त्रा ग म्म त्रा ग ल वि स्थिति ॥ ० ॥

यूवसोय ॥ यत्र स द व गा वृक्रम लसिना
४ नाक स र न यु गयि मा म्य नाक मुरुगी
मिव वृन्द की मा त्री स गृह द व गा का या ग
ना ॥ ० ॥ म म न द व गा वा म्भु कि ना
ग ॥ उ य स म न वि धि ॥ ॐ ॥ गा दू ल

युष्मात्र ॥ यं च त भु र कं म म्भु अमुज ।
कूट म कं चि न म नि स रा या न म भु ल स
नि स ल व न ज क य यः रु तः वृ कः द
धिः घृ गः क तु गि कः क सा यः अ म
म धः स र्ज त स म न र र ग यु ग यि मा

स्य त्राक्रम यद्वदीनाम दोय ० यऊय
गु ॥ ० ॥ दोय ० यऊय ॥ यं ० यऊय
गो निव ० यऊय ॥ कोमात्रीयऊय ॥ यऊय ॥ यऊय
कृगुताग ० यऊय ॥ नागयऊय ॥ यऊय ॥ यऊय
वोविन ॥ यऊय ॥ यऊय ॥ यऊय ॥ यऊय

क ० यऊय ॥ यऊय ॥ यऊय ॥ यऊय ॥ यऊय ॥
नागयऊय ॥ यऊय ॥ यऊय ॥ यऊय ॥ यऊय ॥
नागयऊय ॥ यऊय ॥ यऊय ॥ यऊय ॥ यऊय ॥
नागयऊय ॥ यऊय ॥ यऊय ॥ यऊय ॥ यऊय ॥
नागयऊय ॥ यऊय ॥ यऊय ॥ यऊय ॥ यऊय ॥

मानदशात् ॥ हृदिनिवृत्त ॥ वाज १५
अदं दयक ॥ जंख वाडासिलादा ॥ वम्भ
याकधनदायिधिसरुवरका जादिस
हृदवकुनागि ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
गगाधमरधमनदाद्यका तनगुयी अ

हृदकधुम्भरायत्रयाहिवाना ॥ यिरु
सत्रा गायुगिनद्विक्ता नात्रीयुदाननस
दभनिक ॥ १ ॥ उत्तरखं कर्मविद्युक्
विद्युहं कत्रहं धुवं ॥ गुरु नायवधनक
धमसाग्रहनविद्रु ॥ २ ॥ कार्यय

विद्युमल्लघाठं च कनकरं वरुणविवादा
मिरुय इवेवमं गाया स्वकां रयं ॥ ३ ॥
दात्रलं ननु नगं च मयु वृद्धि धनाय
हा ॥ यारि वात्र संहं दहं धन विनामदा
रुवगं ॥ ४ ॥ सुयत्रय ॥ असंका

त अनयम ॥ त्रक वरुणिता लम्भ शिक
तुत्राकमुदयमस्तु च व धन विकि
॥ ॥ त गा लयु विना ॥ अग्नि
काता ॥ अग्नि दहन ॥ दीप काति
गा ॥ कनकी अविनायक यका कनर

गगन। आगमगृह। जगत्सुव्ययस्थिति
॥ ० ॥ **॥ दिवस ॥** द्वितीयादनामीः व
सायथमयहत्र। गृहअंगमत्र। प्राग
मिलकाल। दीर्घनगुनाग। कर्तुमल
कलकटिमल ॥ कृत्तिनागयादनाग

। मुक्तिवात्रलजीवसंदह। जगत्सुव्ययस्थिति
व्यति ॥ **संयायकवर्ग्ये १० ॥** अत्मादि
॥ जीमहाकास। विनायकः वलीरुगिनी
। अनननाग। कृत्तुयक ८ गियथमहि
ननामसं **२** द्याक **३** गितकत्रसहिः

हमिनाहमिगयक २३ नयका ८ वान
नैकान ॥  ॥ क्रनमीनमसीयैवा
यिकयैवा ॥ उच्छिष्टदवता ॥ उयसमन
विधिमा  ॥ वलिनैयय ॥ हिंसा
यकं ॥ मयमत्स्यमांसा ॥ मृता ॥ जलदि

समहाकातयूजय ॥ वानि ॥ जीरि
मनाऊयऊय ॥ ये ॥ यययययययय
नायकयऊय ॥ ॥ खानवलितरिगि
नीदाययय ॥ ॥ ॥ जकयययययय
नामादातययि ॥ ययमाका ॥ जलदि

लनागयऊ यग ॥ यनकयनागयऊ
 यग ॥ यस्तुत्रनिनागयऊ यग ॥ मांसा
 दूगिकात्रयग ॥ चराससविधोनन
 : स्वस्तिश्रवणिनागि ॥ ...
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

चुया	मखर	ठिका	ठ	
नखर	कड	कड	मखर	रातासिंद ॥
सायातु	आसा	चुयात	सिंद	नदंकाग
कड	देवे	कड	त्रमं	पुमाताठनि
ठिका	ना क	कड	साद	नककासम
सायात	संय	नखर	गुर्घा	सासना
मखर	कड	नखर	ठिका	

रुमाग्रासनकं ययी जग्यामागयिहकान
नगुत्रागम ४॥ १ ॥ द्वियदं वगुयदं ये
विविधद्वयसंयय ॥ मुनालं त्रियनामं
असिंहस्यग्रह न विंद ४॥ २ ॥ अऊया
थ श्रीग्राऊमानकानाशानविनायक ४

मुनासंयदं दयं वानितोकेलं सिंह ४
कनागिसरुतककार्यं ॥ ३ ॥ याया
नदीगवल्कलमिधन्यनयं नय ॥ याय
मांसककार्यकनयनयिकिचुक ४॥
॥ ४ ॥ तमास्यययधिति ॥ ययवो

गिरिकं सुत । गजपयत्र अनायायन
महिषनदिवायिमृगयत्रयमृगनाय
ययमृगिः दिवस ॥ १ ॥ गीयाजकादमी
वनामध्वः ॥ गदवधः ॥ दक्षिणदिशि
यवगयवन्तः ॥ नदवगा ॥ इत

यवन्तः ॥ गजपयत्र अनायायन
समाह ॥ कटि मलकिमिदन्त गजपयत्र
गजपयत्र ॥ अकमलकलः उत्तरवग
वायसायाज ॥ यवगल यवमदा
कल ॥ गदवधः ॥ गदवधः ॥ गदवधः

सुः कृष्णनागः दक्षिणदिक्षनिवायाग
सुनः ॥ हागिदिहावरुवगि ॥ गकक
नागः कृष्णयकः ३ हागियगाः धनव
हावयकः १२ नयकः ८ धनसमीयः १
कृष्णवानधूननाकगि ॥

यक्षमृगनविष्णुयुजा ॥ धनिधात्राः
मउत्रधात्राः नवीदः कृष्णयिक्तम
निसा ॥ मत्स्यामांसः १ यक्षगमहाका
सयुक्तयत्नयनशक्तिमत्राऊयजा ॥
यक्षयचात्रलवर्णीयजा १ नागयाध

नागकर्मनागकर्मपुत्राक्रीत्रावावाम
 नसत्रावः गादात्रयुगि यव्ययसि
 यगायत्रकयधु रवात्र चनागये
 जयग ॥ गुकायुवन ॥ गुगुगिवसि
 नदीक सनागयजाः ससुत्रवगिनागि ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

गुक्र	अंगत्र	वदय	नम
यध १	क्रु	क्रु	रगगास्यान ॥
चउ ४	सास	न	गनिध रगुनिहसना
क्रु	(६)	क्रु	दिगयिकना
सय २	क्रु	वृह	गाकससम
क्रु	क्रु	क्रु	दंनकरियुयी
यधक्रु	गुक्र	अंग	

जा। आसातिवर्षागुरु मधुन च यद्
स्य दी गयनमालिना ४॥ १ ॥
नीचायदादकनदाविवा दवाध्ववसद
उरुथा ४ काथीनासंश्रुत्वा न साग
हनविड ४॥ २ ॥ दहगिमन ४३

रिमासंदातिविजागकनदाविवाड
४खा। नाऊविद्याद्विधिनिद्यालिवा
नखानंकनागिनाग ॥ ३ ॥ यमव
डिसेनासाधनविक्तयमोलीवाल्लो
हं मलिमकनकवसुकवाय। यम

यऊन जुगंधनचिकिच्छु ॥ ॥ ॥
स्युचिक ॥ तुलर्गमिवाः खानयथ
मननइग्गो ॥ आगमगृहसमयमास
हिवगवाः ऊननदिवत्रजसुः व्या
यादकत्रह जुगंधनचिकिच्छु ॥ ॥

दिवसवमागम ॥ दिवसवतु
थीदादभीरववारुमीययुदत्र ॥
गृह आदि ॥ नैमत्यदि ॥ लंदव
मागम ॥ प्रकथिरुहसुयादः कटि
मूलप्रकथिगमात्रः अस्मयीजउ

यस्य सत्रागः कर्णक ४४ मूलयाति
चात्रः कर्कदायः नैऋत्यदि स्थिताः
यत् ० रेखाः स्युः सारुका नदियक
न गगृह्यु वन ४॥ वरुयसा न्वदगु
दाय ४४ गुना गयक १४ गुयक ४

धनवपु न्यः दयं थं कथक १४ इन
यक १३ यक ७ कसत्रा सदिग १ वक्र
सदिगः सगिसदिगः नागनेऋत्यदि
५॥ कर्कटक नागनदिसंगतः किंवा
धनः मा ग्ने म्वा कृणवानवगु सरुवनि

सा नाय जा	म स नाय	यथु धा
मि सा न	जा नः य	ने सु य
नो य मा	द ना य	ने सु य
वडा द य		दि मि डा
नो द जा		न ल ये न
ना य रे जा		
उडा द य	उ म नि त	य य त्रि
नो द	न य द	डा स
डा ना य ना न	जा य	उ ना य य

न का न क य सा के ना
 म ४ या धु न म र्थि य
 ग म्मा दि दा या ध र्म
 स यी अ क र्म वा ग द्वा

या ४ का सा र्थ ना नि ह वि न क र्म द्वा १ ॥
 क म्मा ला र ल द्वा लो व म्मा ला रं नि य ना स नं
 आ ना ग न य न म्मा नं व य स य द न वि
 द्वा २ ॥ न लो थ न उ ध न म्मा मि गु
 ला रं आ ना ग म्मा स र्थ सं य द ॥ क र्म वृ द्धि र्म

व
वान्धः प्रिययगमनश्च वृषं कनागि ॥
॥ ३ ॥ वरुणस्य वृद्धिः धनविनाः मि
कसां समित्तस्येवमिगुदव्यकृषीलागुः
उयकनन शाय ॥ दधिधृगः सकृत्वाः
मकृधालयीतवल् ॥ जुगल्लानगृद

यवमधधनविकिङ्क ॥ गतास्वयविं
न ॥ उदकस्य नदि कृषीकुरुग
किममिमका ॥ उदकविद्यनजगस्य
यग्यागि ॥ दिवस ॥ यं यमिगुयादसी
॥ ग्रहवृद्धस्यमि ॥ वनासंध्याकाल

यस्य ॥  ॥ यं चामरुततामदग्यत्र
यूजयत् ॥ वलिनेवांदगादातयुक्त ॥
रवात ॥ नकवधुयुताकाः सुतामत्या
सां ॥ १ धयसऊत्र ॥ यच्चिमदिमः ॥
तयुतायि ॥ मयिगिय ॥ ० यूजयत् ॥ ॥

किनादाययत् ॥ नागयाध ॥ नागकुम
नागकुपुयमकेम ॥ यं चवृदिम ॥ नाध
नायामके ॥ गादातयुगि ॥ १ यय्युनि
॥ कीरधालाः युताका ॥ १ स्वतवधु
॥ १ विधानेन ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

ओं ध ध गंगा यज ॥ यज न ज्ञा वि
 ग उं सिं ग सं स या र्थ उ न क य ल्पे व
 य वृ ला ग म व यो ज्ञा आ धा त्र या हा
 मद ना क्क म व वा ला द न गु त्त ग धा यि म
 ल ॥ १ ॥ व ध व ध य नि क्क मं आ धा

नं न ग म नं ग धा ॥ क्क धा य ना र व ग धा धि
 य न स्या य द न वि द ॥ २ ॥ वा दो वि वा
 दं व ध व ध न क्क मि ता यि वे निं व वि का र्थ
 ना सं ॥ अ गि ३ ४ र व क्क व वि वि धा न्ध वा धिः
 डि वं व सं ल न र व न ज क ना गिः आ धा न

चिक ॥ ३ ॥ एवद्वेगल नासुनः धनयि
नः काय उवाक वायनः ॥ नेतरुल्लु
कयासः कृषूवल्लु कयायवल्लु ॥ यवमस्य
आगमं यजुर्न धनयि ॥ **स्ययचिक ॥**
उयत्रिगच्छिः वृषयुवगाहनद्रय

वल्लुयुवसः यजद न गमन ॥ लामहि
यजुर्न स्ययय ॥ **दि वस ॥** यय
मीचमुदमी ॥ **यद नति ॥** यज ॥ **वृगाति**
यथमयुद न ॥ वायवदि ल ॥ आ गमद
वगा ॥ गमवागाधिक ॥ नतयिरु सुत्य

मा र्जः । नमि र्दुःख ज्ञानाय । द व का तु
त्रि साः उ य स म न वि धिः । दा न यं च व
दीः च त्रि गु ठ क या म वि त्रिः क गु क द्या
क न य ा णि स थं द । य नः वा न व ति ।
य ऊ र क अ षु उ म क । न न ग य डी

द द्या तु । न न ग य डी । य ऊ र क अ षु उ म क ।
। न न ग य डी । य ऊ र क अ षु उ म क ।
यी न व रूः क्री ल या स म क । स न धा न
न न ग य डी । य ऊ र क अ षु उ म क ।
२ न न ग य डी । य ऊ र क अ षु उ म क ।

नः कूटसहितः रत्नयुगयिमा
 स्वामीनि । यथाक्रियाः वरुणव्यङ्ग
 यत्नागकृष्णस्यङ्गयययत् । यथाय
 नि॥ युगि॥ यं क्वहीयुमाकायीगवत्
 : कृषिकृत्तुयनात्रिनागयङ्गयत् । य

नः रत्नयुगवसिदद्यात् : रत्निनिदद्यात्
 स्वर्गं रत्नयिनागि॥ ॐ ॥ ॐ ॥

१	२	३	गंगागङ्गा
४	५	६	गङ्गागङ्गा
७	८	९	गङ्गागङ्गा

गङ्गागङ्गा ॥ गङ्गागङ्गा ॥ गङ्गागङ्गा ॥
 गङ्गागङ्गा ॥ गङ्गागङ्गा ॥ गङ्गागङ्गा ॥
 गङ्गागङ्गा ॥ गङ्गागङ्गा ॥ गङ्गागङ्गा ॥

एवमिदं कुरुष्व यत्तु नानाः ददुःखवत्सु
व्यकटिप्रयोजकः ॥ १ ॥ अथ विनाश
रतं तत्तत्तद्वनधनं अथ कुरुष्व यत्तु
रुग्णकर्मसंयुक्तं गुरुप्रदं न विदुः
॥ २ ॥ अथ तत्तत्तद्वनधनं विद्याधनं

यन्निष्कृतं मना न यत्तत्तत्तद्वनधनं
वदुःखं तत्तद्वनधनं कुरुष्व यत्तु
यत्तद्वनधनं विदुः ॥ ३ ॥ अथ कुरुष्व
यत्तद्वनधनं विदुः यत्तद्वनधनं विदुः
यत्तद्वनधनं विदुः यत्तद्वनधनं विदुः

न गास्ययिक्त ॥ नदिगदागः ॥ अस्ति
महिषः ॥ इन्द्र न नाजायन्धगिः ॥
गुवादिदृष्टि न गस्यययन्धगिः ॥ दिवस
चिक्त ॥ सयमीयून्मासि ॥ गुरुभुक्त ॥
वना अर्द्धनाति ॥ उरुजः ॥ लदवगा अ

गगनगगदद न गृहः नित अर्द्धवामयी
जा न कथिरु अर्द्धीष्टुः जानयादगृहः
विद्युक्कदभं गाननागा ॥ गुक्कयाधि न
न नागरविद्युति ॥ नगदाभनखयात
नागना ॥ अत्र सा र वृक्त उयऊ ॥ कुरु

नागहमहासूत्रः ॥ १ ॥ गयगविष्णु
वसुदेवगिरि ॥ १ ॥ १० ॥ १५ ॥ २० ॥
निजायक १५ ॥ २० ॥ २५ ॥ ३० ॥ ३५ ॥
नर ॥ १ ॥ १० ॥ २० ॥ ३० ॥ ४० ॥ ५० ॥
न ॥ १ ॥ १० ॥ २० ॥ ३० ॥ ४० ॥ ५० ॥

नागकृतं ॥ १ ॥ १० ॥ २० ॥ ३० ॥ ४० ॥ ५० ॥
दग्धखण्डिकावंग ॥ १ ॥ १० ॥ २० ॥ ३० ॥ ४० ॥ ५० ॥
स ॥ १ ॥ १० ॥ २० ॥ ३० ॥ ४० ॥ ५० ॥
विजयामकं ॥ १ ॥ १० ॥ २० ॥ ३० ॥ ४० ॥ ५० ॥
न ॥ १ ॥ १० ॥ २० ॥ ३० ॥ ४० ॥ ५० ॥

तयुष्मत्सगगद्गमायु मायहाकृश्नुज
 ॥ कृद्गुटसहितजुतविधानननरुतयगयि
 माय्यमनियभकियाः कामात्रोविनाय
 कयजायुस्त्रोनागयजाहमिनायुजय
 ग ॥ जतविधानननरुतुवमिनामिना ॥

गगाथांक्र ॥ थांक्रनकार्यममिमथर

२	१	१२	४ खं कृत्वायिकस्ययुवि
४	३	१०	दकिधीनामकतामिदद
४	१	६	कृमिलि ४ सहाद्यविमस्य

योजयवदश्चमि ॥ १ ॥ अर्थनाह

ह ३

नद्युगाश्च विद्यागमसहदावधि विद्युदं
कत्र हंधा न श्रं कस्य ग्रह न विद्र॥ २ ॥
तत्त्वय अर्थे नि सात् मह कत्र हविष्यदं
विद्यागं मति ना स च द्या रि वा ज सा सं ल
यं ॥ ३ ॥ यत्र दस गम न च उ ड्ड र व च

नमो यहात्र लयं नानाभा गजाऊ लयं
 ॥ जीवमं नय धां क्रक नागिनि स्मृ न
 वस्तु धन चिन्त ॥ ४ ॥ गाम्ब्रद ज
 गिः जीर्णु कृष्ण वस्तु मत्स्य स्मृ मा स क
 दमाय न रा धन चिन्त ॥ ५ ॥ गता स्वयं

विना ॥ उद्योगि गच्छिगि क प्रह मृगक
समानसा गंगी कय ऊ वृद्धि मु था गो
सह सम यय जा जादन पु ग स य य म्
ति ॥ दिव स ॥ अरुमी असा वासा ॥ य
ह जाद क र ॥ व वाय ल ग वृ क रु न

य न व मि मा म् ॥ ०० मा न र ग जाद क
नु । यु मा द न न । कः क स दार्ध क ना शि
द द ग वि स र य ॥ उं य या द म स क र
जा गः घा प्र ह द य म स य ग न थ वु न
द य र व । घा रि वा न जी व स न य स स

नः सकृन् अर्थं नामः दवगा अस्मिदि
लभ्युक्कृकृ सयवस्तृष्टायिः महा
हृदि नोसयनि वात्र ०० मानं युवतः
हृद्य ०० जकृकृकृ स्वाद्या नृप्रियसिः
युगयि मम्य नाकृकृ सयवगा सगृह

युवतः मम्य नृप्रियसि वात्र रुकृकृ वां ॥
कृत्रिकृकृकृ उय सन विधि ॥ सगृ
ह वाद्रिकंः अग्निजागनं कृत्वाः वलि
प्रियकात्रयं नृप्रियसि रुकृकृकृकृकृ
यं कृत्वा सगृह मधुनिक कृकृकृकृ

नसादियकीः अष्टुजवलि १० न वि
मम्यष्टिगननाकरा न्नात नव ७ व
लिकावयरा सयन ४ कोमात्रीकव
यात्रमहाकोतः वृकसु नरुवान
दासंगमः चष्टुगवतीनिवयज

यराससाभनः सगवाकरं १ स्वाग
मनथ १ कृजगनमथनद्वजः यं
अष्टुगायहिनाच्यः हाकहागमम
मानवलिदशाग सवयक ६ यक ११
यक १२ कृगवाने स  मथथम

कथा ॥ कलिक नागयस्थ ग्रन्थि ५ गाथा ५
तयुगि २ नागयडयत् ॥ हनिनिव
लिदाययत् ॥ स्वस्व रेवनि त्रामि
३॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
रङ्गिकाठयंजिकाविरचितं अखर्व

कथासुवनकाप्रसादविप्रसा
 नायनिमित्तिनयजाह्लादगयादा
 मखर्बुयदार्थमयदंयवः निवयक्र
 कोमात्रोः गयत्रः चउरगयाभुकि
 नायरा १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

धमया ॥ नित्यानं कात्रमवित्रसा ॥ ना
गिनं सं २ दयी वरु नाहिनमयुद्ध
वः विनायकः रुरा कोमात्रा रेत्रवः
हनमनः रुरा युगः युक्कजपीना
ग ॥ २ ॥ ॐ ॥ ॥ ॥

सिंह ॥ कनया नाहागनवित्रसा ॥
कयत्र कनधून उववसुद्विके
दयिवः कनयदार्थः कनके केमा
ना रुरा रुरात्र गयत्र यनात्रिह
नमनः महाकात्र चानि ॥ ३ ॥ ॐ ॥ ॥

स्वान ॥ कर्मणिष्ठि संवियः ना. डा.
 मयदवद म न न या थ या ३ । स य थ
 न य के मि व ० न य. खा स. स्म न
 न ॥ ना हा ॥ ✓ ॥ ॐ ॥
 ॥ ० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

वृषया ॥ कनि का संवि न साः ना जि
 मं २ मि ऊ त य नार्थ म व या का सं ग
 या दाः र गः य गः ना दूः को मा गी
 द वीः य ऊ य र ॥ ५ ॥
 ॥ ८ ॥ ॥ ॐ ॥

१५३ ॥ कय जल का संभव नादा
गन. ऊव वा राधिसा विवसा. प्रा गरु
मन यग साक. थस हत्र यद ववः
नमा याध. कामा गी. यि नाच. ग. लमः
रुग. कजं क. रुधि ॥ ४ ॥ ॐ ॥

१५४ ॥ कय जल गन का दृकं यल्लि
वान विवसा. प्राय गा उग सं नं. ज्या दायः
कृव रुजि व महा कार. रुग व ठाल सिं
ह कामा गी. द्वा क सं य स विवय ॥
॥ १ ॥ ० ॥ ॐ ॥

ॐ क न द्या न का या व रु या न
 वि न ता । आ ग ना ना स्का द् हा क य न
 र्ध ह या दाः ना द् रु र ग य न र्ग मि नी
 मा उ म न का सि का पि मा न्ध व ना न
 वा नि स्म मा न स व सि क्क रु य उ य न् ॥ ८ ॥

र म र्ग ता ॥ १ ॥ आ डा वि शाः अ रि डि ग् ॥ १ ॥
 र यो र्ग ता ॥ २ ॥ य न र्ग ताः स्वा मि प्र व र्ग ॥ २ ॥
 र धा ता ॥ ३ ॥ य यः वि म माः ध न र्ग ॥ ३ ॥
 र या ग नी ॥ ४ ॥ अ र्ग नीः अ र्ग ताः अ न्ना दा ॥ ४ ॥
 र हि का ॥ ५ ॥ र र्ग नीः म घाः अ र्ग य व रु द् ॥ ५ ॥

हउ नका म न कृत्तिकाः य वृहा लुनी मलाः

उरु लद यदाः म ५ ॥

सिद्धा म गु म नाहिनीः उरु ह लुनी य वृषादाः

त्रवर्गि म १ ५

संकेता म ना म मृगनिनाः सप्तः उरु वादाः

म ६ म ६ ॥

श	चं	ला	ना	वृ	म	वृ	क	गु
५	७	५	१२	१०	१२	११	५	१३
०	६	६	०	६	६	५	६	५
कृ	ना	य	आ	य	य	अ	म	य
उ	रु	यि	सा	यि	अ	अ	म	य
उ	ग	भ	म	य	उ	न	अ	र

	अ	इ	ए	आ	वृ	म	य	क	उ
४	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	२	४	२	१	१	१	१	२	६
	१२	०	२४	१	१२	१६	२४	२४	०
	ना	म	ना	अ	ना	या	म	या	ना
	र	रु	ना	भ	उ	भि	रु	भि	उ
	य	ना	या	ला	र	र	र		र

	अं	अं	आ	वृ	म	य	क	उ	आ
४	०	०	१	०	१	०	०	१	०
२	१	४	०	१०	०	११	४	१	४
	२०	२०	०	२०	२०	१०	०	१०	०
	क	र	र	मा	इ	ध	ना	रु	ना
	ल्या	य	य	ना	रु	ने	ना	रु	उ
	न					ला	ना	ला	मा

४
८

अं	जा	वृ	म	व	क	३	आ	वं
०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	६	११	८	११	३	२	१	५
८	१२	१५	२०	२६	२६	१०	२५	२०
म	म	य	व	ध	को	उ	ना	सा
रु	रु	रु	रु	रु	रु	रु	रु	रु
रु	रु	रु	रु	रु	रु	रु	रु	रु

१२

जा	वृ	म	व	क	३	आ	वं	ला
१	१	१	१	०	१	०	१	०
२	१	१०	८	८	०	१	०	८
१८	५	२५	१२	१२	०	५	०	१२
ध	उ	न	का	अ	वा	म	म	आ
न	ख	उ	ता	मि	य	रु	रु	रु
ना	ध	ग	रु	रु	क	य	य	य

70
6

व	म	व	क	उ	आ	यं	ला	रा
१	१	१	०	१	०	०	०	१
८	८	८	८	२	८	१०	८	८
२	८	४	१४	१०	१२	२०	४	५
ध	स	म	द	क	००	व	म	५
न	स	उ	म	न	ह	म	श	क
वि	नि	ला	ला	ह	सा	के	द	र
		र	ग				उ	

१२
४

म	व	क	उ	आ	यं	ला	रा	व
१	१	०	१	०	१	०	१	१
०	८	८	१	८	०	८	१०	८
२	१४	२३	१०	१८	२०	२३	२४	८
वि	सा	वा	स	म	व	सं	रा	म
दा	न	शि	ख	उ	ध	लिया	श्रु	लि
त्रा		आ		ह	हा	न	य	मान
ग		ग		ह				

११	व	क	उ	आ	य	ला	जा	वृ	म
४	१	०	१	०	०	०	१	१	१
	०	०	१	३	११	०	६	५	२
	६	२६	२०	२४	१०	१६	१२	४	१३
	य	म	व	ना	■	म	ल	आ	ध
	म	म	म	ना	या	ल	ल	ना	म
	ला	यि	ला	ना	धि	ला	न	ग्य	इ

४	क	उ	आ	यं	ला	जा	वृ	म	व
६	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३	२	२	४	३	६	०	६	०
	६	२०	२४	२०	६	१२	१४	२३	२६
	म	उ	अ	अ	र	म	य	रु	वि
	उ	ल	नि	थ	क	न	उ	मि	द
	ल	दा	र	आ	म	स	ला	क	ग
	न	का	य	म	ग		त	थ	म

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

कामदेवमहादेव ।

आनन्दः धर्मो
कीर्तयेत् महा

卷之五

सुखदामोदर

三

बुद्धावस्थायां

॥ इति श्री

[illegible]

सर्वज्ञानसिद्धि

三

अथर्ववेदसंहिताया

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

卷之四

三

卷之五

三

卷之四

卷之五

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

उ वि द ध न नो धा ०
 ह अ उ म अ म अ
 वि ध ० य र आ म
 म म उ हे य य
 वि द ध न नो धा उ
 अ उ म अ म अ र
 धा ० य र आ म वि
 म म उ हे य य वि
 य ध न नो धा उ वि
 उ म अ म अ र अ
 ० य र आ म वि धा

० म र ग धो धा सि धि धा
 ० म न नो र म न स र
 म धा धा क्र ० धि नो र
 म नो क व अ य नो र म
 म उ यो नो वा य म क्र म
 ० म र क नो म र म नो
 म नो न यो धि र यो र व
 ० म धो नो म धि यो म
 ० म म गं को नो र व
 म म नो न न द न यो र
 म म नो म म स र व

॥ भगवतः दशोः त्रयसिद्धिः
 या ॥ मानः सुकृपाया
 ते ॥ यथा ह्युक्त्या या ना
 ते ॥ तेन वे अनेनाहः
 ॥ उक्त्या अयदशो
 ति ॥ भगवतः यदशो
 ते ॥ कोनका ह्यदश
 दि ॥ सिद्धि सदा नो
 ता ॥ अनेनाः सुतुष्टु
 रवे ॥ भगवते
 ता ॥ भगवते नदः
 कथा सुदयः

उक्त्या दशसाम् ०
 न नाकाउ विद ०
 म अम अर अउ x
 य उ अम विद ० ०
 उ कृपा दशसाम् ०
 न नाकाउ विद ०

अथ नोमिज नव त्यां मुग
 भनय नदसि दय अह
 तथार सोयुस भगव
 उक्त्या ॥ ॥ अहिनी
 जालिद दालि सानि वि
 जालि नो नो अवे सुद

गदाक्षयनलोदय ॥ गदा कः भद्रव भद्रवः
मा गं गिकं जसे रवरे मा गं किं सि गतः
नाकः सानि रवयं द्याकं ॥ नाकः संप्रति
व नं वा नवव रे रे गं ॥ वरिः भद्रः भद्रवः
विनमि नवव भानि ॥ मि नवव
वृक्षा सव रव रथा ॥ वृक्षाः नो यथा गताः

धनिष्ठयां दुस्स नम थ
मा हसि गा ॥ विभा रवा
उरु गो विमि रवा अडा
यम स ध्या ॥ अथ रवा कु
मि का थ वदु स्स नम न
सं भु वं ॥ ३ ॥

वृक्षे भद्रवः भद्रवः भद्रवः
मो नवव रव रथी वृक्षे भद्रवः
या ॥ भद्रवः भद्रवः भद्रवः
क न्या मि भद्रवः भद्रवः भद्रवः
भ गो वृक्षे भद्रवः भद्रवः भद्रवः
भद्रवः भद्रवः भद्रवः भद्रवः
भद्रवः भद्रवः भद्रवः भद्रवः

० ज्ञानमिदं सप्त सप्त ०

२ आ वृक्ष वृक्ष ०

३ अ वृक्ष वृक्ष ०

४ अ वृक्ष वृक्ष ०

५ अ वृक्ष वृक्ष ०

६ अ वृक्ष वृक्ष ०

७ अ वृक्ष वृक्ष ०

८ अ वृक्ष वृक्ष ०

९ अ वृक्ष वृक्ष ०

१० अ वृक्ष वृक्ष ०

११ अ वृक्ष वृक्ष ०

१३ वृक्ष ॥ नीव वृक्ष ॥

१४ अ वृक्ष वृक्ष ०

१५ अ वृक्ष वृक्ष ०

१६ अ वृक्ष वृक्ष ०

१७ अ वृक्ष वृक्ष ०

१८ अ वृक्ष वृक्ष ०

१९ अ वृक्ष वृक्ष ०

२० अ वृक्ष वृक्ष ०

२१ अ वृक्ष वृक्ष ०

२२ अ वृक्ष वृक्ष ०

२३ अ वृक्ष वृक्ष ०

रुयनागसाग. नानाद्वयकृषिडा ॥ १ ॥
हस्तविद्या. स्वागि. नृगमित. यनर्वस. उरुता
रुतुपी. अश्वनी. धननक्र. गुया. वा. यमं. पु
समलिदहस ॥ २ ॥ धनय. नाहिनी. अनेना
डा. पुबल. अश्व. उरुनायाटा. उरुनरु

रुपी. उरुतु. धननक्र. गुयामह. पुमपु
सालिनवृद्धि. स्वागि. नइयि ॥ ३ ॥ आडा. अश्व
या. मस. नगलिवा. नवनी. य. वा. वाट. अ
लिङ्गित. धनवा. नृगीम. पुसालिदहस. सा
का. मुलेरु. स. वृद्धि. इ. यिडा. लिद ॥ ४ ॥



अव ६ कासमाक

अ २ साहा उं

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

हमानीवोसाधन. वायथ. थ. थं व. क. ला. ऊ. य.
उ. म. न. ल. म. स. य. दा. उ. वा. य. ॥ थ. उ. नु. गा. ला.
य. थ. स. ॥ ना. म. च्छ. उ. स. ड. थ. द. गं. स. थ. का. य.
उ. स. या. उ. वि. स. गं. य. इ. ना. थ. न. न. ला. उ. न.
स. य. इ. स. न. न. स. सि. छि. का. य. स. थ. न. न. मो. न.

म. द. न. या. य. उ. नु. थ. ॥ ॐ ॥ १ ॥ ० ॥
उ. न. म. ड. ग्री. ग. ल. मा. य. ॥ थ. थ. वी. न. ह. न. न.
क. थ. गं. ॥ ॥ ॥ यु. ति. य. द्यां. न. व. स्यां. व. वा. इ. य.
न्या. दि. न. क. उ. यं. ॥ सो. म. वा. न. स. मा. य. कं. न.
या. दि. ह. न. लं. र. व. र. ॥ अ. व. र्जा. उ. य. थ.

सुख्योत्र नाम दुःकास्य ग ॥ मधुनापि
विज्ञानायाकोसात्रं तस्करं हे व ॥ अ १०
अथ नीः रुः कुः दिमायव ॥ १ ॥
द्वितीयादमीवेवनादि न्यादिनकुतु
यं मंगत्रवात्रसंयकं गोमुत्रोत्रलिङ्गा

निगं ॥ कवर्ज्यां यथासुख्य गस्करिना
मज्जानिगं मिथूननामिरुवरुसवाल
सुगस्कराव व ॥ क ८ ॥ नाः मः आः
दिना अत्यन ॥ २ ॥ रुगियकादमी
मित्थेयनवसादिनकुतुयं वधवात्र

साहज.

समायकं सहजं हृदयं वदन् वद
ज्ज्यां यदास्य योत्र नामयुक्तमय
रासिंहनासिंहिका नीया जोरनागस्क
नं वद ॥ वद ॥ यः यः अदिम
दक्षिण ॥ ३ ॥ चतुर्थ्यां च वद

स्यां मद्यादिनकृत्यं रत्रिवात्रमाय
कं सहजं हृदयं वद ॥ वद ॥ यः यः अदिम
दास्य योत्र नामयुक्तमयरासिंह
नासिंहिका नीया रत्रिवात्रमाय
वद ॥ वद ॥ यः यः अदिम न

ह्य ॥ ४ ॥ यं कृत्वा यां गुथा दसां
हस्तादिनक्रुयं । गुत्र वा तसमायुक्तं
उवादिमग्न्यह्नं रं वत् ॥ तव ज्ञो
यां यदा स्यात्तत्र नामयुक्तं मथरा ॥
विष्णुनामिद्विज्ञानीया मध्यमगत्कृते

वत् ॥ ग ॥ ५ ॥ ह. वि. स्त्रा. दि. म. य
प्यिमे ॥ ६ ॥ यत्तु यां यत्तु दि. म.
वि. म. यादिनक्रुयं । वृहस्पत्यादिवा
नक्षत्राणां दि. म. यत्तु ज्ञं ॥ यव ज्ञो
यां यदा स्यात्तत्र नामयुक्तं मथरा ॥

धनजातिविजानीयागस्तुमीमध्यामास्तु
सं॥ य॥ ॥ विः अः अः दिनावाय
व्यं ॥ ३ ॥ सकृन्मां यत्तुमां यमना
दिनक्रुयं ॥ मनैः यत्तुदि संयकं नो
यादि साहचोत्रं ॥ यवग्न्यां यदा

सुय्यचोत्रनामयुक्तमयराविद्युता
मिविजानीयावृद्धचोत्रं रुवेय्य ॥
य॥ ॥ मः यः उः दिनाउरुत्त ॥
॥ अस्तुमां उग्नित्वा यवग्न्या
दिनक्रुयं ॥ सकृन्मां यत्तुमां यमना

मादितामुच्यते ॥ न वग्न्यां यदा
रुय्यो न नामयुक्तमय ॥ मी
ननासिहमायकं वृद्धीरुक्तो संरुव
रु ॥ न ८ ॥ यः धः नः दि ॥ न ८ ॥
न ॥ ८ ॥ यः धः नः दि ॥ न ८ ॥

वरुडादिनक्रयं ॥ न विमनिगथा
वा नं ॥ अयथा गुरु न वय ॥ न ८ ॥
अयमी न वय गुरु न वय ॥ न ८ ॥
वृद्धी न वय गुरु न वय ॥ न ८ ॥
रु वरु ॥ न ८ ॥ यः धः नः दि ॥ न ८ ॥

प्रः ॥ इति चोत्रमाह सुप्रसमाय ॥
॥ २ ॥ ॥ मर्गं तामर्गं जानद
उसा विद्युदयनी । विर्गं ताम्भवा
गा व्याधिमनसा इत्यसंखवा ॥ अन्त्या
धनसहस्रधनयधिमनिनीकनी

॥ यामनी सर्वरुमीधोऽयमयसर्वता
दिमा ॥ रुद्रिकासमयोमीधुविना
धदासदायनी । उतकाजाधधना
नाल्यहाजिनी इत्यसंखवा ॥ सिद्धा
चसाधनं कार्यं नृपनाधं च कार्यं

का ॥ संकटा संकटायाधिमलजंक्रम
दायनी ॥ ॐ ति याग्निवर्धन
प्रसाके ॥ ॥ ॥ मनिश्चकं
नयाकात्रंतिखरुयगुमनिरुवरु ॥
गगनकृपादिकंकुत्यायावत्ताम

नजस्यव ॥ नावद्विवातयकुरु
रुयं गुरुमथा गुरुं । एकमस्यव
नकुरुं चत्वात्रादिकिलकन ॥ गु
यंगुयं यादयाश्चहृदययं चमव
व । वासवगुरुयं मोतिनगुगुञ्ज

यं वयं ॥ हानिता पृथक् किं पद कृत्वा
लक्ष्मण वयं मितां ॥ इति श्रीमत्क
न्यायं यादव्यक्तं न सदा ॥ ननु म
ख गुट मय्य मनि यव विवालय
न ॥ अयं यज्जिज्ञावायि कल्याणं

जायता सदा ॥ ॐ शि मनि पृथक् ॥ ॐ ॥
रमया मृगनि साह साह्यागिम सा अ
न नारथा ॥ न वनि यादि नी यव
उज्जयं व रथ ॥ नानि व विवा
हानि सर्व कार्यानि साधयन् ॥ इति

कार्यसि न स य ध्वजा नारु न म व व ॥
धनिसि न न क तु ॥ ४ ॥ दीय दा
न कि या दाम अग्नि य तु विद्या न य
त गि धि वा न न क तु व सं या र्य म
के सं य रं ॥ ल ग तु यं धि न स्य वं -

स्व र्ग म क र्क स सि ता र या ता न तु
दि ल य र्क तु न र्क म ध्व मं तु ल ॥
हानि उ त्या ग स ज्ञे च या ता न ना सि
मं ग ल ॥ म र्क मं तु ल ता रु च आ
यू स र्क सि ता उ च ॥ ॥ २ ॥

I 2017

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

	ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ	
	ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ	
	ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ	
	ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ	
	ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ		ॐ	

ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ ||
ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ ||
ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ ||
ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ ||
ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ || ॐ ||

[illegible][illegible]

१ तात्रांकेन प्रयत्नः ॥

11 12 13 14 15 16 17 18 19 20
 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30
 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40
 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50
 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60

[illegible]

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13
 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25
 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37
 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49
 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13	14	15	16	17
18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30	31	32	33	34
35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47	48	49	50	51
52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64	65	66	67	68

ᐱᐱᐱᐱᐱᐱ ᐱᐱᐱᐱ ᐱᐱ
ᐱᐱᐱᐱᐱᐱ ᐱᐱᐱᐱ ᐱᐱ
ᐱᐱᐱᐱᐱᐱ ᐱᐱᐱᐱ ᐱᐱ

ᐱᐱᐱᐱᐱᐱᐱᐱᐱᐱ ᐱᐱᐱᐱᐱᐱ
ᐱᐱᐱᐱᐱᐱᐱᐱᐱᐱ ᐱᐱᐱᐱᐱᐱᐱᐱ

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript or ledger entry.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्री गुरुदेव नमः ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

2 118 056 ከይዘዘይዘይዘይ
704 15 223 ይዘዘይዘይዘይ
111 115 388 ከይዘዘይዘይዘይ
11 115 188 ይዘዘይዘይዘይ
110 115 088 ከይዘዘይዘይዘይ

111 115 288 ይዘዘይዘይዘይ
111 115 288 ከይዘዘይዘይዘይ
110 115 088 ይዘዘይዘይዘይ
111 118 176 ከይዘዘይዘይዘይ
111 115 388 ይዘዘይዘይዘይ

८ न उद्दग गुरु सार अम काल गुरु नाग उद्द
२ वं अम काल गुरु नाग उद्दग गुरु सार अम
६ मं नाग उद्दग गुरु सार अम काल गुरु नाग
३ व सार अम काल गुरु नाग उद्दग गुरु सार
१ व गुरु नाग उद्दग गुरु सार अम काल गुरु

५ ग गुरु सार अम काल गुरु नाग उद्दग गुरु
१ म काल गुरु नाग उद्दग गुरु सार गुरु काल

वृहस्पतिः ब्रह्माः शक्रः देवः धर्मः गुरुः
शुक्रः शनिः ॥ १ ॥ शनिः शक्रः शक्रः कुरुः
शक्रः शक्रः शक्रः शक्रः शक्रः ॥ १ ॥



११ १२ २१

॥ नमः श्री गणेशाय ॥

उत्तमं यथ नमः ॥ १ ॥

आदित्य चंद्र चित्रा

नलम् श्री लक्ष्मिनाथा

हृदयं ऊतम् ॥ अह

स्वर्गादिभ्य उर्यावसंस्थमहादिज्ञाना

गिनजस्य वृद्धिः ॥ २ ॥ अथ यथार्थं

लोमं गंसहमी नखादिचैव नमसा गता वरु

माना देवा गन्ता यः ॥ अथ गिर्युसंक्रान्तं ॥ ३ ॥

द्वितीयां द्विगुलं कार्या याः ॥ यं यथा तृतीयां कं

सर्वमकंदुगंलगर्दीखाडादमकंदुवा३॥
५ ॥ **अथ दायविश्वामासमसवलेरु**
गानि. वृषमि. नमनाकसा. मिथूनम्यग
हदावा. कर्कटनगनरुथा. मसिंदवकु. त
दवता. दायंकेत्या. समानदवता. गुत्य

सुनदायं. अविश्विकग्रामदायंके. २ ॥
धनसुतामिगंदायं. मकनयुऊ. गतुथा.
कंरु. यममाननु. मत्तु. आ. कामयागिनी
॥ ३ ॥ **अथ दाय३॥** या. या. ला. वा. स्वा. मि. द.
३. ना. वा. सो. मा. वा. ला. रु. स. ग. ला. मि. वृ. छि. ४

न

स्नानसत्रमात्रं सप्तमं ध्यां क्रुधमया म
४॥ १ ॥ न नानंथ निवस्य ययनं कृदि
कादिनक गादि निविषुयदं ४ द राग
कं १ ग्राहयत्त निराजन लभं रुतम
यगं ॥ १ ॥ अथ उच्यते ॥ जकनमि
कन २ ॥ यानक गृहस्था यम पिदतन ॥ १ ॥

नमंस्तु नदिगीयन लज्जगव ४ विगी
यादिगित् लभनच रुथ गृहमागगं ॥
२ ॥ ययनमन गजस्तु नं वयं गाग
विगीय गं ४ ॥ ययनमन गं यय
यय विवा नय ४ ॥ ३ ॥ १ ॥ २ ॥

विगतयन ३॥ ग्रामनिद्रासाधन
४॥ अथ यथाकथन २॥ ग्राममंडा
निद्रा॥ ग्राममंडागिरि १॥ वसुध
कविंगतदन ॥ ६ ॥ इति ग्रामग
वसुध ॥ २ ॥ द्विगीतदनीय

यं सयदहं यत्र वागमः ४॥ विदिनां
गत्रं यत्रं दं वायिमागमं ॥ ३ ॥ ॥
१॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥ ६॥ अथ यथा ३॥ ४॥ ५॥
अथ यथा सयदहं वागमः ॥ ३ ॥ ॥
निद्रा यथा वायिमागमं ॥ ४ ॥ ॥ कदगि

७
३
२
०
१

कान्तमुरस्मिन्मयायकन्दीष्टमव
 डिगव।सर्वोथसिद्धियुवदननामं
 विद्युजयस्तव अयजयंस्तारु ॥ ८ ॥
 उन्नाहृत्तयाय ॥ यस्तुत्तरीयदम
 ममुरकृत्तनामकादमुच्यतेयं

यिऊँयमिगुलारं।स्तुनाउमाविरुव
 किमगुविनामनयउमथ्याददागिवि
 यनधनमानरागानु ॥ १ ॥ यस्तुत्तरीय
 मयनवउनायकुडिस्तुनालोवत्र
 न्तिप्रियवृद्धिमस्तुनामा।यामाहयं

७
८
०
२
४

११
१०
१
३
५

स्वकृतवन्धुविययागंदडागलाकड
 ननकनविकनागि॥ २ ॥ नकादडा
 चदमसकगनीयसकसुययमिग
 धनकाकनवसुताहं॥ कनयेदस
 मयनामनमानगानुयोरिंददागि

व
 वियनचसदयड॥ १॥ ॥ द्विद्वादना
 कनवमंकेचरुथनालीलाडागला
 कडनसार्थविनामनके॥ दमविदम
 गमनंमननंविवाडः चंड॥ कनागि
 यनसममहालयक॥ १॥ ॥ नका

२
१२
८
२
५
४

११
१०
७
३

दलचदममयहृगीयत्रासोलासकना
मिविऊयंयत्रमार्थवृद्धिनिर्णयन
मयययंमयमरुमयकल्यानमियधन
धन्यमयमयकयोरुम **मं** मयकय
नवऊमयमयवृद्धिजयाणादमऊमनिग

१
८
१
८
२

२
४
८
१
११

मयविलंददगिवाकाकिनागत्रधिना
मयममिदादमादमयवर्जकमयविष्णु
मयममम **मं** मयधदिगियमयनय
मययमममकादमगुदममयकनागि
वृद्धिंमममममिगुगुवाकममयद

अस्मत्तान् नय कृतमर्थ ऊनय दूआत
 म **व** म आद्य ह गी यन व स फ र थ
 यि य द स र ग गी म न ध गी त्त ऊ न गी
 क ष आ या स मा र्ज र य म थ क रं वि वा
 दं वि य र य सं य न व या म्ब क गी नि

२
 ३
 ४
 ५
 ६

र्यं म **व** म ज का द ल दि न व यं व स फ म
 म ल य र न वि वि ध ग न त र ध न य
 र गी न वृ द्धि ऊ यं यि य म गी य व यं
 क गी र्ध म्मा र्थ का म वि र वा यि दि मा न
 र गी न् म **व** म व द्वा द म वि व र

१
 २
 ३
 ४
 ५

१
 २
 ३

धनं नाना मोचनं विविध कार्यरुपा ध
 दानि रक्तानां नृप क्षद्विद्यदा गतमनुवा
 संनयनं गार्विष्यसमाचकार्यो राम
 वृत्तं नृकाद्विद्यं च वरुणा न वेष्टि न
 नम कादलमधु रदक्षसद वधु कक्ष

१२७४८२३॥

कुर्यात्सर्वसुखजनकाश्च न जन्तवः ।
संमानदा न विविधस्य नायका ग्गान्
॥ १० ॥ सुकुम्भजन्दममस्यैष
नासा कुर्यान्नृणां कलदेवसुखनयना
मंत्रद्विदिनामयात्रिगा यन्निबिदि

१०
११
१२

११
१०
३
७

अंशानां विद्यादत्तनागविधानवृद्धिः
 मु मुजकादलवदनामं च नती यम
 ह लोत्रोद्युमाथमविलासमयैयुक्थो
 रा। सुनंधनायययमस्यधिकं च तां
 वृद्धिं वनामयययं मुखमवकृथां

म म मुजना नयं च नवसकचनु
 यनामोसकथमाखगतिवाजवदन
 गच्छं। लोत्रोद्युमाथमजगं रयमथ
 नां कृथां नृणां सुजनवध्वविद्याग
 इ४खं म म मुजकादलवगतिवना

१
२
३
४
५
६

सुगति यद्यथा सो वतं रुतमिदं स
 ददाति त्रादू ४१ आहृयि गडु गि युव
 धन धन ता रुं नानि वृद्धि विवि
 धा मयि वयु धनं स **ना** समकदि
 य र्दम मय न वृद्धि ज न त्रादू ४२

जति च दुजना मय गि क र्था ग १ आ
 त्रा धनं त्रिय वृद्धि स अर्थ ना मं त्रा ग
 यु वा स ग म ल म ज न र्क क र्था ग २ स
ना स रु स रु त्रि स स नो य न य का
 नि नि म क न १ म ज न व स नं को मः

१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०

वृद्धमुपनवद्धनं ॥ अर्थहागिगु
नृत्तवमुक्तवन्धनं ॥ अथ
दानरुतं च वननिस्तानाविलम्बशाते ॥
॥ ० ॥ अथिगंतुवन्धनं ॥
समाप्तं ॥ ॥ ददयहायधुमाणां

अहनासध्यानायि ॥ गन्धर्वायायस
यस्यां यकचयुगिययथा ॥ १ ॥
युगनकयुगदिययस्यां सयिवा
नगा ॥ नाकसिनायायिनाय्यायव
गुदस्यां विरहित ॥ १ ॥ अथहा

दायकं ॥ चययासा अम्बनी ॥ १ ॥
लित्तससारुनी ॥ २ ॥ आळूड
दाकृष्टिका ॥ ३ ॥ वावाविदनादि
नी ॥ ४ ॥ वावाकाकिमृगनिजा ॥
॥ ५ ॥ कद्यउळू आडा ॥ ६ ॥

ककादादियनवेस ॥ ७ ॥ इरु
दादायथ ॥ ८ ॥ दिइददा अष्ट
या ॥ ९ ॥ मामिमसमया ॥ १० ॥
मागाटिइयवसलुनी ॥ ११ ॥ टटाया
विउअसहारुनी ॥ १२ ॥ यथाभा

टाहला ॥ १३ ॥ यथा नात्रिनिशा ॥
१४ ॥ न न ना सा सागि ॥ १५ ॥ गिरु
न ना विनामा ॥ १६ ॥ नानि न न न
न ना दा ॥ १७ ॥ गु धा दा दा य बा मा
॥ १८ ॥ ना या दि क क ॥ १९ ॥ य था
२०

ला रि म ल ॥ २१ ॥ गु धा दा दा य बा
मा दा ॥ २२ ॥ ल ल ऊ ऊ उ ला मा दा
॥ २३ ॥ ऊ ऊ ऊ ला ऊ रि डि गु ॥ २४ ॥
खि र्ख र्ख र्ख गु न व न ॥ २५ ॥ म
मि गु दा ध नि य ॥ २६ ॥ ल म सा मि ल

मगलिका ॥ १७ ॥ ससादादिवर्षे लुड ॥

१८ ॥ इथक उउरुलुड ॥ १९ ॥ ददा

चाचिचवगी ॥ २० ॥ ॐ गिदादाचके ॥

२१ ॥ चयवासातिसूतसा जमम ॥ १ ॥

ॐ उजक वाविवववृषे ॥ २ ॥

काकिरुद्यउचुककादमिथून ॥ ३ ॥

हिद्रुहदादादिद्रुददाकके ॥ ४ ॥

मामिमममाठाठिट्टिमिंद ॥ ५ ॥ यया

यिद्ययासाठययाकन्या ॥ ६ ॥ नात्रि

नूननागानिनुगनुता ॥ ७ ॥ नाना

निजूननायायियवृश्चिक॥ ८ ॥ यथा
त्तारित्वाद्यजटाधन॥ ९ ॥ एता
जिह्वकजायाविरवस्वखागमिमकन॥ १० ॥
जुलालासामिसमादकं॥ ११ ॥ दि
इधमजददायानिमीन॥ १२ ॥ वृश्चिक

द्वदमनामि॥ १३ ॥ आतामय उवावृ
य॥ काट्टमिधन॥ दाहाकं॥ साटाहिंद
याथाकत्ता॥ नागागुना॥ नायावृश्चिक॥
रुधाधन॥ व्याघामकन॥ लालाकं॥
दायामीन॥ ० ॥ अइउरुगन॥ १४ ॥ गनद

वोक्तनजातः

नाजावंशः

भूमि
मिस्र
जात

नविद्या ॥ १ सिंहधनमं मकरियक
॥ २ कंठमिधनगुला मुडा ॥ ३ कन्या
वृषरुमकनवदेव ॥ ४ विद्युवंश
मूयानाजी मुडवजमयः यगिशाधु
वंशुयगिदेधवां मुडसइहिगायदि ॥

॥ तिचगुधवजल ॥ ॥ शुवजल

मृगवाञ्छिनायधमगुयनवसूरावागि
रुक्तचत्रवल्यां नशदवगलास्मृता ॥
१ नाहिनीगुनियद्वीनीउरुनागिनि
मवच ॥ ॥ डाचरुगुलिचैवनेचवामा

नखागला ॥ १ कृत्तिका मघादिनां च
 अश्लेषा मृगशिरा ज्येष्ठा ॥ त्रिगुणां च
 निषाद मन्वन्तरा क्रमात् ॥ ३ दवरा क्र
 मथावेनं मन्वन्तरा क्रमात् ॥ ४ कर्तद
 दवदेवनां मन्वन्तरा क्रमात् ॥ ५

नाक्रसीतु यदा नाजीयन्त्यामानवथा
 एवंगविवादिना चायममासावरा
 कायवेद्युतिं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अन	मृग	मरा	मनु	उरु	अडा	दरु
१	२	३	४	५	६	७

गङ्गाविमलनागाविन्दवन्द्यसोमसुभग
 लिखन्वलयमयदुयुगामनिन्दःमसध
 नमयिजावसय्यदवन्द्यसुक्रनविमल
 मयिदहसुमय्यजागविनगभा ॥

व	यु	स	अ	न	काच	चकु
१	२	३	४	५	१२३	३

कान्तप्रतिपदा

रव्यसिन्धो नमो गिरिदोमयसीरामवस्य
 अष्टम्यांदवमकुनमीसुगनवसीवकुय
 द्वादसीवकुईसीरामवार्जुगानिगिथि
 दग्धानिसर्वकर्मविद्वज्जयम् ॥

अ सनवाहनदवडागसत्त्वसज ॥ १ ॥

रु युगवादानः मनथजागः सत्त्वकिमि ॥ २ ॥
 कु अग्निवंः पुवादानः नाकसजागिः सत्त्ववात्र ॥ ३ ॥
 ना रुमिमावादानः मनथजागः सत्त्वनाग ॥ ४ ॥
 मृ मृनावादानः दवजागिः सत्त्वरुटि ॥ ५ ॥
 आ विवादानः मनथजागिः सत्त्वखिया ॥ ६ ॥
 य यतस्मानवादानः दवजागः सत्त्वरुमि ॥ ७ ॥

थ यर्कु कजवादानः दवजागिः सत्त्वरुयी ॥ ८ ॥
 अ काखवादानः नाकसजागः सत्त्वरुटि ॥ ९ ॥
 म मसवादानः नाकसजागः सत्त्वकु ॥ १० ॥
 य स्वदवादानः मनथजागः सत्त्वकु ॥ ११ ॥
 उ त्वदवादानः मनथजागः सत्त्वकु ॥ १२ ॥
 ह किमिवादानः दवजागः सत्त्वमस ॥ १३ ॥

चि क्रुसखावादानः नाक्रुसजातिः सत्यध्व ॥ १५ ॥
 स्वा दूजिवादानः दवजातिः सत्यमंस ॥ १६ ॥
 वि रुमिवादानः दवजातिः सत्यचनो ॥ १७ ॥
 अरुं वादानः दवजातिः सत्यचनो ॥ १८ ॥
 क्क कायनवादानः नाक्रुसजातिः सत्यचनो ॥ १९ ॥
 म एनवादानः नाक्रुसजातिः सत्यखिवा ॥ २० ॥
 य वाचगिवादानः मानूक्रजातिः सत्यमाक ॥ २१ ॥

उ वाचगिवादानः मनूथजातिः सत्यसा ॥ २२ ॥
 अ सिंदवादानः दवजातिः सत्यनयन ॥ २३ ॥
 न नववादानः दवजातिः सत्यमाक ॥ २४ ॥
 य आजवादानः नाक्रुसजातिः सत्यसिंद ॥ २५ ॥
 म थसावादानः नाक्रुसजातिः सत्यमंस ॥ २६ ॥
 य कयगिवादानः मनूथजातिः सत्यसिंद ॥ २७ ॥
 उ कयगिवादानः मनूथजातिः सत्यसा ॥ २८ ॥
 न चक्रवादानः दवजातिः सत्यकिसि ॥ २९ ॥

हृ | श्र | अ | न | ज्ञा | न | अ | य

१ २ ४ ७ २ ७ ३

आदित्यहस्तागुनयथाकागमवक्षान्तना
धननिजादिनीवसासंनसासंरेगुनव
गिन्नलोमायमिवाप्तगामिदि कागमः ॥ - ॥

रथी उवाग्वादिनी ॥ संगनायं मय्येस्ये

कृत्वात्तसादायनं ॥ आकाशदयावदु

गुत्तमयस्यमय्येस्यं ॥ द्वादशदंभलाम

माकिनादायनसुगं ॥ वनदवीरवदा

तांनिगद्यता ॥ अयस्येस्येदेखयस्यं वज्र

१ सयुमदादुजवेस्यं ॥ कामिगुदादुमादिबदवदा

^{१२} तदद्यामदाय सं ॥ मनि ^६ न्यत्र यो यो ^{१२} र्थे
 दामस्यादाय वा गऊ मा ऊमि तु दौ दे अत्र
 दूक गति ह्यन इय नं ॥ ॥ यि गृदा सिम य
 धार व सा य दू धा रानि विवर्धु गा ॥ १ ॥
 वृष य ग षा द व्या व क स क ४ स्य प्र न
 जन द व या धा रा

^{महाकाव्यादय}
 यु क ॥ १ ॥ मिथून य म दा का स दा
 य व ला क स दि रिः ॥ ३ ॥ क क ट म
 कि जी दा वा दा न्य प्रा द न मो न रा ॥ ४ ॥
 मि रं ऊ स यु ग दा वा दि वा र ग क स म
 धा ॥ ५ ॥ म य द दा मं द क न्या यां का
 ग्र ह ग ति या

दा वि नी मा दि न्ना

स्था १

कृत्या नया

रुजगो नैविस्तथा ॥ ५ ॥ हस्तुयान
 रुवदायागुत्तमगायवीउतं ॥ १ ॥
 विष्णुकनागदायंयक्षस्यदहकवडि
 गा ॥ ६ ॥ धायायदहस्यदायाका
 लमाकादनयथा ॥ ७ ॥ मकनचडि

नागया
 दास

विष्णु
 म
 वि

कादायादहस्यंलंकितानिच ॥ १० ॥ समति
 नित्यगदायश्चकुरुदहस्यवीउतं ॥ ११ ॥
 मीनययागिनीदायाऊतऊंऊतदम
 जं ॥ १२ ॥ वायधर्मगृणीयश्चय
 यायमुदायदाहमागलचसुचग

थय

सदा वं कृतं रवः ॥ मनो जल कृतं मस्तु
 गतं सूर्यस्य वं मंड ॥ त्रादू ध्वविक गो
 नक्षे मा नित्य जाद्वि जाद्वि जा अल ॥ स्वक
 गुस्व लभ गुदा वं यय नं रव गो ॥ मस्तु
 गुम गुदा वामि गुक गुस्व उ नं रव गो ॥

१०० गिहा वदिया सं ॥ • ॥ १११० थ

१०	२	५	५	यारु स व कृतं न ह्वा ॥ २
३	०	११	१०	विना धा ॥ ५ थ यारु स
१३	१२	१	६	० गु रु स ॥ ५ थिं ग्व ॥ ३
२	१	१४	११	कृ न रु य ॥ ० गु रु रु य

अथ यदय ॥ १५ निरुय ॥ १० दीपिना
 य ॥ १३ ता रु रु य ॥ १२ दानि रु य ॥
 १ मि बु ता रु ॥ ८ म न न ॥ १ के रु ॥ १
 मु न्य ॥ १४ क ता न ॥ १५ गा रा यु ऊ
 न रु य ॥ ॥ व स्वा मि व दा सु मि
 ७ ३ ४ १

वा न नं दौ स द स यु न न न व का रु क रु
 १ यु सु गि का स रु व न वि लि र्वा स रु व न
 रु य या यु स वं ति सी युं ॥ मी न म स रु स यु
 व ता वा व रु क रु या ॥ म क न मि थ नं द
 टि का यं य स वा न ग्ना स रु स रु ॥ ॥

अन्धतादिगलम् अमकनक्रयं ३ गुन
 याय ६ रागयाय लवजागिनी ॥ ० ॥

वं	आ	वृ	अं	व	म	पु	त्रा
सं	यिं	धा	ला	र	उ	सि	सं
१	२	३	४	५	६	७	८
अ	न	द	मा				

वर्षदमा

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	मास
दिना	१	२	३	४	५	६	७	८	दिना
१०	२०	०	१०	२०	३०	४०	५०	६०	

आ	वृ	अं	व	म	पु	त्रा	वं
यिं	धा	ला	र	उ	सि	सं	सं
१	३	४	५	६	७	८	९

वर्षदमा

अनदमा

१	२	३	४	५	६	७	८	९	०	मासदि
१०	०	२०	१०	०	२०	१०	२०	१०	२०	न

१ वर्ष द
मा॥

वृ	शु	वृ	म	शु	म	वृ	शु
आ	ल	र	उ	ति	सं	मं	यिं
३	४	८	८	१	८	१	२
अनंदमा॥							
३	४	८	८	१	८	१	२
०	०	०	०	०	०	०	०

मास
मास

अं	वृ	म	शु	शु	वृ	र	वृ
ल	र	उ	ति	सं	मं	यिं	आ
४	८	८	१	८	१	२	३
अनंदमा॥							

मास	८	८	८	१०	१	२	४
दिने	१०	२०	०	१०	२०	२०	०

व	म	मु	न	वं	न	व	अं
रु	उ	सि	सं	मं	यि	धा	ला
८	७	११	८	१	२	३	४

अनदशा

सात ८	१०	११	१३	१	३	८	७
दिन १०	०	२०	१०	२०	१०	०	२०

म	मु	न	वं	न	व	अं	व
उ	सि	सं	मं	यि	धा	ला	रु
७	११	८	१	२	३	४	८

अनदशा

सात १२	१४	१०	२	४	७	८	१०
दिन ०	०	०	०	०	०	०	०

सु	जा	चं	त्र	वे	अं	वे	म
सि	हं	मं	यिं	ध	ला	र	उ
०	६	१	२	३	४	५	६

६ अक्षरदशा॥

साप्ताहिक	१६	२	४	०	२	११	१४
दिने	१०	२०	१०	२०	०	१०	२०

जा	च	त्र	वे	अं	वे	म	सु
मं	मं	यिं	ध	ला	र	उ	सि
६	१	२	३	४	५	६	०

६ अक्षरदशा॥

साप्ताहिक	२१	२	२	६	१०	१३	१५
दिने	१०	२०	१०	०	२०	१०	०

पुलंति	वृद्ध	पुलंति	पुलंति
पुलंति	पुलंति	पुलंति	पुलंति
वृद्ध	जागाय	वृद्ध	पुलंति
वृद्ध	द्वयागव	वृद्ध	पुलंति
मध्यम	लाग्रह	नार्क	पुलंति
वृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	पुलंति
वृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	पुलंति
वृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	पुलंति
वृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	पुलंति

२३ यत्र यत्र
सुनंति यत्र
दलोकाद गः
॥ ३१ ॥ १००
११ ॥ १३ ॥

१२ ४ १० कायज १

मीनकालो लमक नृकर्म सिंदुला
यां मिथे नरु निमि के क धन कन्यक
विधिमता या धर्मिणी मय वृषा ल्यादि मिश्राय गज
जति ॥ के रुय वलि मरु इरि कं म
थय नग क मलं सर्वजनु नां यधियां यजि न



मय्येषा स्वगमय
 कर्तुं च त्वयं यं यं गीवा
 यो च नाग्यस्तथा यं च कं
 च ऊ यो सिंहा प्रविशाम
 दि नवा यः थडा नाम नक
 गुमा कथमया रले ॥
 ॥ काले च के ॥ ० ॥



रमनि ॥ ० ॥
 ॥ काले च के ॥ ० ॥

लिलि. सले. रवत्तकु. गिलि. उच्चै. न
 नाधियं. गिलि. निचै. रवद्दास. गिलि. अ
 संगरो. ऊ. उ. वंडुसग्गय. म. स. न. क. ऊ. ली
 निदिवाकन. सामिनासं. रवर्क. स. वं. न्या. वा
 धवतकनः. ॥ गिलि. सि. भ. त. स. न. वि
 ची. त. ॥ ७२. ॥ . ॥ . ॥



रमादमत्रागमाहृष्टिकंमलिदुः राडासार्ग
 नागः नग्वदसत्रागसाधनताहृदयिडा
 यादवग्वदमलागमाहृष्टिकंनमलिदुः
 धनतासइयिडाः नग्वउसग्वत्रंकासाग
 साडायथानगसमहिनिडाः यिवायं
 रुडाः योथनगत्रासागसासधमरु
 सदिद्यागनथः सग्वउसतागसासम

मलयसनिइयिडाः दिद्यागसतागसा
 मसासलि ॥ मलयइयिडा ॥ ॐ गिनोमि
 रमयात्रिणमः वसवुल्लुमुक्तः मिथनरुठन्याः
 वदककुं ॐ दः सिद्धे ररा नुः धनमीनेजीव
 केनाधिपौवो मकुंरुलीगीना धनकेन ६

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमः श्री गुरुभ्यो नमः ॥

ॐ नमः श्री वेङ्कटेश्वर्यो ॥ ॐ नमः श्री स्वर्गनाथ्यो ॥

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ ह्रीं कुरु स्वाहा ॥

अननमस्तु नमस्तु ॥ ३ ॥ ॐ नमः श्री

गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमः श्री गुरुभ्यो

य ॥ ॐ नमः श्री उवाच ॥ ॐ नमः श्री स्व

कृत्यनाथ ॥ ॐ नमः श्री मङ्गलनाथ ॥ ॐ

सर्वसाधनां सत्यं समयं न कथयिष्यामि ॥

ॐ किं किं किं किं न विदुः स्वाहा ॥ ॐ न

मिथ्या नमः ॥ अथ नवग्रहस्य सत्यं ॥ अ

स साक्यात्रत्यास्यं ॥ अथ नाथस्य ॥ अथ
॥ अथ के प्रवाय अथ सा के कथं ॥ अथ
मस वरु कक वु या गि जी ल्य ॥ अथ
न स द व रं ल्य ॥ अथ स ल्यं न क थ
यि ल्या मि न म ॥ अथ ल्या ॥ अथ न न म नु न य

त्रि स ल्य य मि जा य ॥ अथ न नि वा नि म रि
म नु स ता द्र सं य लि क य थ ग ॥ अथ न इ ल्या
उ म म ग धा त्र स ल्य थ ग ॥ अथ वि य क ल ॥ अथ
अ ध म सि द स्या न वृ स ल्य थ ग ॥ अथ अ धां क ॥ अथ
मि ऊ न ग नि रं का व र थ ग ॥ अथ स र न म

विचक्रुर्लौ विचिन्तयताः ॥ ॥ दिगलम्
 गृह सग्नं विज्ञानी योः ॥ ॥ न सग्नलवस
 दा ॥ ॥ दशनाकरुता नाकरु ॥ ॥ वग्गुरुलानि
 यमस्यं सस्यं सगनकथयिष्यामि ॥ ॥
 उं नमः ॥ ॥ ॥ ॥

रत्नाल	मन्त्रि	बाय	दुर्क
गज	मन्त्रि	बाय	दुर्क
सह	मन्त्रि	बाय	दुर्क
नगल	मन्त्रि	बाय	दुर्क
वैश्व	मन्त्रि	बाय	दुर्क
सग	मन्त्रि	बाय	दुर्क
विग	मन्त्रि	बाय	दुर्क
कजल	मन्त्रि	बाय	दुर्क

रत्नाल मन्त्रि बाय दुर्क
 गज मन्त्रि बाय दुर्क
 सह मन्त्रि बाय दुर्क
 नगल मन्त्रि बाय दुर्क
 वैश्व मन्त्रि बाय दुर्क
 सग मन्त्रि बाय दुर्क
 विग मन्त्रि बाय दुर्क
 कजल मन्त्रि बाय दुर्क

लयुसन्निकरुजाश्चट्टङ्क ॥ १ ॥ विउ
 यं वार्थतारुस्थिर्यालेन्यसमागमं कर्म
 सिद्धिश्चक्रमश्चउत्तयदनविद्रु ॥ २ ॥
 अर्थतारुं सखकाऊनातांताऊतारुंरुवक
 था। सखसांराग्यरुमियुतालंयिमियि